



सितम्बर 2020

वर्ष : 3 अंक : 12

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर



निदेशक की कलम से



संस्थान का मासिक समाचार पत्रिका, सितंबर 2020 आपके समक्ष प्रस्तुत है।

सर्वप्रथम मैं आप सभी को हिन्दी दिवस की बधाई देता हूँ।

14 सितंबर का दिन हम सभी भारतीयों के लिए बेहद गौरवमय दिन है स्वाधीनता प्राप्ति के बाद नवीन भारत के लिए संविधान बनाया गया। लेकिन भारत की कौन सी राष्ट्रभाषा चुनी जाएगी, ये एक महत्वपूर्ण मुद्दा सामने आया और तब हिंदी और अंग्रेजी को राजभाषा के रूप में चुना गया। 14

सितंबर, 1949 को संविधान सभा ने एक मत से निर्णय लिया कि आगे हिंदी को भारत की राजभाषा दर्जा दिया गया। तब से हर वर्ष इस दिन हिंदी दिवस के तौर पर मनाया जाता है। हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हमारी वर्तमान सरकार का कदम सराहनीय है। आज देश के नेता विदेशों में जाकर भी हिंदी में वक्तव्य को महत्ता दे रहे हैं। ऐसा इसलिए किया जा रहा है ताकि भारत के साथ-साथ विश्व स्तर पर भी हिंदी भाषा के महत्व को स्थापित किया जाए। यह हमारी सरकार के प्रयासों का ही नतीजा है तो हिंदी बोलने वालों की संख्या में लगातार वृद्धि देखी जा रही है।

सितंबर 2020 के इस अंक में संस्थान में हुए अगस्त माह के कार्यकलापों का विवरण दिया गया है। इस महीने 74वां स्वाधीनता दिवस मनाया गया जिसमें सामाजिक दूरी भी बनाई रखी गई। हाल ही में भारत के माननीय प्रधानमंत्री ने डॉल्फिन मछली के संरक्षण से मछुआरों के सामाजिक-आर्थिक विकास हेतु डॉल्फिन परियोजना की घोषणा की है जिसे ध्यान में रखते हुए संस्थान ने दिनांक 24-25 अगस्त 2020 को एक अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया जिसका उद्देश्य दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों में क्षेत्रीय रणनीति और साझेदारी के माध्यम से नदीय डॉल्फिन का संरक्षण करना है।

इसके अलावा संस्थान ने वीडियो कोनफरेंसिंग द्वारा महत्वपूर्ण बैठकों में भाग लिया। संस्थान ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में उमियाम में पिंजरे में मछली पालन हेतु मछुआरों को प्रशिक्षण दिया तथा पश्चिम बंगाल के सुंदरवन मैन्ग्रोव में जनजाति उप योजना और अनुसूचित जाति उप योजना कार्यक्रम के तहत मछुआरों परिवारों को चूना, मछली का चारा और मछली के बीज का वितरण किया गया था।

मैं आप सभी को हिन्दी दिवस की पुनः हार्दिक बधाई देता हूँ और परमात्मा से आपके उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

धन्यवाद,

बिकेदार

(बसन्त कुमार दास)

नमामि गंगे परियोजना के तहत हिल्सामात्स्यकी का विकास



प्राचीन काल से ही बंगाल और उसके आसपास के राज्यों में मछली को एक श्रेष्ठ खाद्य पदार्थ माना जाता है। पर स्वाद, आकार, रंग, उत्पादन और उपलब्धता के आधार पर इसकी मांग भिन्न-भिन्न देखी गयी है। विविध और समृद्ध जैव विविधता के कारण 'हिल्सा' मछली का स्थान सर्वोच्च देखा जाता है इसलिए, इसे मछली का राजा 'माछेर राजा' के रूप में भी जाना जाता है। बंगाली नव वर्ष अथवा शादी समारोह या फिर अन्य किसी भी विशेष त्योहारों में इस मछली से विभिन्न प्रकार के व्यंजन तैयार किए जाते हैं। हिल्सा मछली बांग्लादेश और भारत में पश्चिम बंगाल, ओडिशा, बिहार और असम जैसे कई अन्य राज्यों में रहने वाले लोगों के लिए सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण है। यदि इसमें उपस्थित पोषक तत्वों की बात की जाय तो हिल्सा मछली ओमेगा 3 पॉलीअनसैचुरेटेड फैटी एसिड, ईकोसैपेंटेनोइक एसिड (ईपीए) और डोकोसाहेक्सैनोइक एसिड (डीएचए) से भरपूर होता है जो मस्तिष्क और हृदय के लिए लाभकारी होता है।

इस प्रजाति को आमतौर पर बंगाल की खाड़ी, हिंद महासागर, अरब सागर और फारस की खाड़ी में एक समुद्रापगामी क्लुपिड के रूप में जाना जाता है। इसके अलावा, भारत और बांग्लादेश के गंगा-ब्रह्मपुत्र अपवाह क्षेत्र में इस प्रजाति को अधिक पाया जाता है। भारत में, गंगा (हुगली), ब्रह्मपुत्र नदियों और विशेषकर नर्मदा मुहाने में मानसून के दौरान हिल्सा मछली बहुत अधिक पायी जाती है। हिल्सा की बाजार मांग और वैश्विक औसत वार्षिक पकड़ 0.72 मिलियन टन है जो बांग्लादेश की कुल पकड़ का 50 से 60 प्रतिशत, म्यांमार का 20 से 25 प्रतिशत तथा भारत से 15 से 20 प्रतिशत है। भारत के सभी राज्यों में, पश्चिम बंगाल में पकड़ी जाने वाली और बांग्लादेश से आयात की जाने वाली मछलियों की अधिकांश खपत होती है। उच्च कीमत और कम उपलब्धता के कारण हिल्सा की खपत में बहुत कमी देखी गई है। पश्चिम बंगाल के दीघा और डायमंड हार्बर बंदरगाह, ओडिशा, गुजरात और मुंबई में अलग-अलग लैंडिंग स्थलों पर हिल्सा पकड़ और इसके थोक मूल्य पर प्रश्नावली के माध्यम से एक सर्वेक्षण किया गया था।



स्थानीय बाजार सर्वेक्षण के अनुसार, 400 से 800 ग्राम वाली हिल्सा का मूल्य पश्चिम बंगाल (कोलकाता) में रु. 1400 से रु. 3500 प्रति किलोग्राम और ओडिशा (चिलिका) में रु. 900 रु. से रु. 1800 प्रति किलोग्राम था। कर्नाटक (बैंगलोर) में हिल्सा का थोक वितरण मूल्य (500 to 1000 ग्राम आकार) का रु. 700 / से रु. 1200 / प्रति किलोग्राम (स्रोत: स्पर सुपरमार्केट, बैंगलोर) था।

हिल्सा मछली को सबसे पहले वर्ष 1822 में कानपुर और आगरा के पास गंगा नदी में और 1877 के दौरान प्रजाति गंगा नदी के निचले हिस्से से दिल्ली में दर्ज किया गया था। 1960 के दशक के मध्य के दौरान, हिल्सा को गंगा नदी में अधिक पाया गया था। 1955-1972 के दौरान इलाहाबाद में हिल्सा की औसत पकड़ 48.42 टन और बक्सर में 140 टन थी। हालांकि वर्तमान में, गंगा नदी के इन स्टेशनों पर इसकी पकड़ लगभग शून्य

हो गई है। हिल्सा माल्थिकी में हास और इसकी पकड़ में कमी के लिए निम्नलिखित कारकों को उत्तरदाई ठहराया गया है – (i) नदियों पर बांध बनने के कारण अभगमन पाठ का अवरुद्ध होना जिससे मछलियां प्रकृतिक प्रजनन क्षेत्र में नहीं पहुँच पाती हैं, (ii) सभी प्राकृतिक आवासों जैसे ज्वरनादमुखों और नदियों में मछली पकड़ने के दबाव (iii) नदी के भौतिक-रासायनिक मापदंडों में परिवर्तन और औद्योगिक प्रदूषण और घरेलू अपशिष्टों के कारण पारिस्थितिकी तंत्र का हास, (iv) जलधारा ईएसए अवरोध और जलवायु परिवर्तन के कारण जल प्रवाह में कमी और (v) नदियों में गाद जमाव का अधिक होना।

इसलिए अब यह अत्यंत आवश्यक है कि निदान उपायों के द्वारा हिल्सा प्रजातियों का संरक्षण किया जाए और बड़े पैमाने पर हैचरी में



उत्पादन करके अंगुलिकाओं को नदियों में प्रवाहित किया जाए। गंगा नदी में हिल्सा मछली के संरक्षण के महत्व को महसूस करते हुए, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) ने भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय माल्थिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) के साथ मिलकर हिल्सा पुनरुद्धार कार्यक्रम पर एक पहल की। गंगा नदी में हिल्सा के प्राकृतिक भंडार को बढ़ाने के लिए रैंचिंग के माध्यम से हिल्सा के अंगुलिकाओं को देश के कई राज्यों में गंगा नदी में प्रवाहित किया है। इसके साथ ही हिल्सा के अभिगमन प्रवृत्ति और अभिगमन मार्ग का अध्ययन किया है। फरक्का में हिल्सा अभिगमन के अध्ययन के लिए फरक्का बैराज के ऊपर गंगा नदी पर पहला हिल्सा रैंचिंग स्टेशन स्थापित किया गया। दिलचस्प बात यह

है कि बलिया, पटना, भागलपुर और साहेबगंज के मछुआरों ने बताया है कि पिछले तीन दशकों से, उन्होंने कभी हिल्सा नहीं पकड़ा था, लेकिन वे 150 ग्राम से 200 ग्राम के बीच एक या दो हिल्सा की मछलियों के मिलने से आश्चर्यचकित थे। हिल्सा प्रवास को समझने के लिए फ्लो टी-बार एंकर टैग के साथ 402 ब्रूड हिल्सा मछलियों को टैग किया गया था। अध्ययन अवधि के दौरान प्रयागराज, वाराणसी, बलिया, बक्सर, पटना, भागलपुर, राजमहल, सुल्तानगंज और फरक्का से 2000 से अधिक स्थानीय मछुआरों को हिल्सा के जीवन चक्र, हिल्सा संरक्षण पर लीफलेट और पैम्फलेट द्वारा हिल्सा टैगिंग के बारे में जागरूक किया गया।

अध्ययन में सफलता के सूचकांकों को देखते हुए, नमामि गंगे ने तीन



रूपालि शस्येर चल नामबे गङ्गाय

फरक्काय इलिश ट्यागिश्ये चलछे गबेवणा

अर्पण चक्रवर्ती • फरक्का

31 नवम्बर 2: फरक्का आर्पणस्थले, नदीर मवाहासे कीचारे इलिशेर उद्धानन वाडानो यात्रे, ता निचे वीथवासे परीक्षामुक्क गवेवणास नेमेचे सेन्ट्रल रिजल्ट सिफारी रिपोर्ट इकाटिउट (सिफरी)अक्कारायाई) ए वाराकपुर सिफारी। फरक्कास देना सेई गवेवणा सकल हसे आगामीदिने फरक्का रूपालि शस्येर चल नामबे बसे मने करा हसे।

फरक्का वाडोकेर कसे एकटि कारणा सेचे सेनासे सिफारी आउठ टेरि करे इलिशेर गवे टाग आगिश्ये एई गवेवणास काळ सक करा हसे। एवनाउ पश्चि सडे तिन हाकावेर बेनि माछ सेई आउठे हाउ हसे। एवनाउ अतिनि गडे तिनशेर बेनि माछ सेनासे हाउ हसे। तिमठयाला २२० सेके ७८६ मिलिमिटर टेम्परेचिइ इलिश माछेर गवे सिरीवाल नखर निचे मूय टाग जागाना हसे। सेन्ट्रल रिज रिपोर्ट

इकाटिउट (वाराकपुर) सुरु जना निचेसे, फरक्का आर्पणस्थले नदीर मवाहासे इलिशेर उद्धानन वाडानोस लक्केई यात्रे गवे टाग जागाना हसे। एई गवेवणास आरेकटि उद्धानन हल करक्का सेके एवनावेन परीक्षे एवलेकर फरक्का इलिशेर परिचाली पदातिके उपलब्धि करा। तसे जना करक्कास नई हसे यात्रे रिजल्टाटि कीचारे माछेर गवे अनुयायी नदुन करे निर्माण करा यात्रे, ताउ तसे सेना हसे। एर पाशागुलि सेके उ वडोकेर सुटि नल करक्का सेके एवनावेन परीक्षे फरक्का सुपाकेर विजि राजा, रिजेश करे परीक्षकर, काउचउ, विहार उ उडरठसेनेर विजि एवकास अविहित सुलतानगंज, राजमहल, डायगपुर, पानिा, बखार, बालिया, बेनारस, अयागवाक अकुठि एवलेकर मामुथके इलिशेर कीचरवाण सम्पर्के सचेतन करक्का विसेरउ मन्सठाचि उ वारागुलिसेर इलिश निचे सेनि सचेतन करा हसे।

अक्षयसे रिजिरीर (वाराकपुर) वरिष्ठ विज्ञानी उ. एके शस्य बसेन, फरक्का इलिशेर ट्यागि-एर माछे निचे आचारा फरक्का आर्पणस्थले नदीर मवाहासे इलिशेर माइसेनेस सम्पर्के जामते पावरे। इलिशेर गवे उद्धानन करक्का आचारे एवेकटि माछ कठोरी तिम बसेन करेचे ताउ जना यात्रे। एवना माछेर सेके वाडानोस सके उद्धानन कुचिउठे करे जागाने। प्रजननकर इलिशेर वाक फरक्का आर्पणस्थले आचारे विज्ञान करके पावरे किना, एई गवेवणास माछेर आचारे ता जामते पावरे। केन्ट्री अक्कारिइ मूठुकेर नामनास मिशन कर तिम फरक्का उदोसे गवे सेनेसेर सेके एई काळ सक हसे। सेन्ट्रल रिज रिपोर्ट इलिशेर इनावाउ उरठिउठे अचरिउटि, फरक्का वाडोकेर एव सेन्ट्रल रिज रिपोर्ट इकाटिउटि मिलिउठवे फरक्का उपरिवासे इलिशेर उद्धानन वाडोके पावरे। तसे फरक्का उद्धानन वाडोकेर रिजल्टाटि मीटिनि हसे वाचउ हसे फरक्का इलिशेर मवाहासे वे वाडोकेर हसे, ता कीचर करे सेनि तिमि।

साल (2020-23) के लिए गंगा नदी में हिल्सा पुनरुद्धार कार्यक्रम (द्वितीय चरण) को स्वीकृत किया है जिसके निम्नलिखित उद्देश्य हैं – (i) गंगा नदी के ऊपरी हिस्सों में हिल्सा मछली की संख्या वृद्धि के लिए फरक्का नदी के ऊपरी क्षेत्र में 30,000 हिल्सा ब्रूडर्स का लक्ष्य, (ii) हिल्सा नदी में कृत्रिम प्रजनन और गंगा नदी में हिल्सा अंगुलिकाओं का पालन (iii) मछुआरों की अधिक सक्रिय भागीदारी के साथ गहन हिल्सा संरक्षण पर जागरूकता, तथा हिल्सा संरक्षण के लिए गंगा प्रहरी और पश्चिम बंगाल, झारखंड, बिहार और उत्तर प्रदेश के मत्स्य पालन

विभाग का सहयोग (iv) गंगा नदी में प्रजनन स्थलों और संरक्षण स्थलों की पहचान करने के लिए फ्लो टैगिंग और उन्नत तकनीकों (ई-टैम्स और सेंसर आधारित) के माध्यम से वर्तमान हिल्सा अभिगमन मार्ग की स्थापना।

उप-क्षेत्रीय सहयोग के माध्यम से नदीय डॉल्फिन संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार : भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन द्वारा एक संयुक्त पहल



नदियों के पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य की सूचक, नदीय डॉल्फिन की संख्या विभिन्न मानवजनित गतिविधियों के कारण दिन-प्रतिदिन घटती जा रही है। हाल ही में, भारत के माननीय प्रधानमंत्री ने डॉल्फिन परियोजना की घोषणा की है जिससे डॉल्फिन मछली के संरक्षण से मछुआरों के सामाजिक-आर्थिक विकास में मदद मिलेगी। अपरिपक्व और अव्यवस्क डॉल्फिन मछलियों का अंधाधुंध और अवैध शिकार के कारण इन मछलियों की संख्या लगातार घटती जा रही है। अंतर्राष्ट्रीय संघ, आईयूसीएन (IUCN) के अनुसार डॉल्फिन मछली का अस्तित्व अब संकटग्रस्त है। अतः इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए सिफरी ने दिनांक 24-25 अगस्त 2020 को एक वेबिनार का आयोजन किया जिसका विषय था, “ नदियों की पारिस्थितिकी और इसकी डॉल्फिन जनसंख्या पर COVID-19 के प्रभाव का आंकलन : भारत-बांग्लादेश-म्यांमार-नेपाल में डॉल्फिन संरक्षण के लिए वर्तमान स्थिति और भावी रणनीति”। इस वेबिनार का उद्देश्य दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में क्षेत्रीय रणनीति और साझेदारी के माध्यम से नदीय डॉल्फिन का संरक्षण करना है। इस वेबिनार में विभिन्न देशों जैसे भारत, नेपाल, म्यांमार, बांग्लादेश और इंडोनेशिया के डॉल्फिन के विशेषज्ञों ने अपने अनुभव और विचार साझा किया और देश के विभिन्न संगठनों, कॉलेजों और अन्य देशों के 550 प्रतिभागियों ने इस वेबिनार में भाग लिया। इस वेबिनार में कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा की गयी- डॉल्फिन मछलियों के आवास



स्थान, इनकी जनसंख्या की स्थिति, नदीय पारिस्थितिकी, डॉल्फिन मछली का जीवविज्ञान, जल की गुणवत्ता के संदर्भ में नदियों में इनके आवास स्थल का आकलन, मानवजनित दबाव से डॉल्फिन पर गहरा संकट, डॉल्फिन को बचाने के लिए संरक्षण उपाय और नीतिगत मुद्दे। वेबिनार के अंत में नदीय डॉल्फिन के संरक्षण के लिए एक क्षेत्र-विशेष दिशानिर्देश किये गये है। इस वेबिनार के प्रख्यात वक्तागणों में प्रमुख थे - राजीव रंजन मिश्रा, आईएस एवं महानिदेशक, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन, जलशक्ति मंत्रालय, भारत सरकार; डॉ. जे.के. जेना, उप महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, भारत; डॉ. वि. के. दास निदेशक, केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ,



कोलकाता; डॉ. दिलीप कुमार, पूर्व उपकुलपति, भाकृअनुप- केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई; डा. अजीत पट्टनायक, उपाध्यक्ष, वेटलैंड इंटरनेशनल; डॉ. संदीप बेहरा, जैव विविधता सलाहकार, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन; डॉ. वी. आर. चित्रांशी, पूर्व सहायक महानिदेशक, अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली; डॉ एस पी विश्वास, प्रोफेसर, डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय, भारत; डॉ. सैयद इस्तियाक, बांग्लादेश; डॉ. हिला विन, म्यांमार; डॉ. एम के श्रेष्ठा, नेपाल; और डॉ. डैनियल कर्ब, इंडोनेशिया। प्रतिभागियों ने गूगल

मीट लिंक (meet.google.com/atp-rsug-dor) के माध्यम से वेबिनार में भाग लिया तथा इसका सीधा प्रसारण लाइव यूट्यूब लिंक http://youtu.be/sNP_ypcul80 पर प्रसारित हुआ। इस वेबिनार का आयोजन राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन, सिफरी, इनलैंड फिशरीज सोसाइटी ऑफ इंडिया, प्रोफेशनल फिशरीज ग्रेजुएट फोरम, इंडिया (PFGF) और AEHMS, कनाडा द्वारा संयुक्त रूप से किया गया है।

डॉ. जे. के. जेना, उप महानिदेशक, (मात्स्यिकी विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने अपने स्वागत भाषण में सरकार द्वारा देश में मछली के उत्पादन के साथ-साथ निर्यात राजस्व को दोगुना करने के लिए निर्धारित लक्ष्यों के बारे में बताया। उन्होंने वैज्ञानिक समुदाय द्वारा विभिन्न मत्स्य प्रजातियों को विकसित करने और पिछले पांच दशकों में देश में उत्पादन बढ़ाने के लिए किए गए योगदान पर भी ध्यानाकर्षण किया। उन्होंने कहा, "अधिक नई प्रजातियों को आगे लाने की आवश्यकता है। इससे न केवल किसानों की आय बढ़ेगी बल्कि आम लोगों के पोषण सुरक्षा भी सुनिश्चित होगी"। डॉ. रविशंकर, सी एन, निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान, कोचीन; डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन; डॉ. गोपाल कृष्ण, निदेशक और कुलपति, भाकृअनुप-केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई, डॉ. दिलीप कुमार, पूर्व निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई ने भी सभा को संबोधित किया।



मुख्य शोध उपलब्धियां

- ओडिशा के सालिया बांध में स्थापित आयताकार पिंजरो में लेबियो रोहिता (रोहू) और पंगासियानोडोन हाइपोफथाल्मस (पंगास) का बहुपालन किया गया। इसमें रोहू और पंगास मछलियों के अंगुलिकाओं को 35 अंगुलिका प्रति घन मीटर की दर से संचयित किया गया था। इसमें यह पाया गया कि पंगास मछलियों के साथ 5-10 प्रतिशत रोहू के पालन से उत्पादन वृद्धि के साथ पिंजरे के जाल में बायो फाउलिंग की समस्या भी कम होती है।
- पश्चिम बंगाल के नबद्वीप के एक खुले आर्द्रक्षेत्र, छारंगंगा बील में प्रथम बार अत्यधिक मांसाहारी विदेशी मगरमच्छ प्रजाति, *एट्रैक्टोस्टेअस स्पैटुला* (परिवार: लेपिसोस्टीडे), जिसका वजन 2.25 किलोग्राम था, की पहचान कर उसे दर्ज किया गया है। भारतीय नदियों की बहुमूल्य मछली विविधता को ऐसे मांसाहारी प्रजातियों से खतरा हो सकता है इसलिए इनके प्रवेश को रोकने के लिए तत्काल नीतिगत निर्णय की आवश्यकता है।
- निचले गंगा बेसिन में तीन बाढ़कृत आर्द्रक्षेत्र के जलवायु संबंधी विसंगतियों के संदर्भ में जीआईएस तकनीक द्वारा इनके स्थानिक-सामयिक परिवर्तन का विश्लेषण किया गया जिसमें इन आर्द्रक्षेत्रों से दर्ज की गई न्यूनतम और अधिकतम में कमी 37.20-57.68 % पायी गयी। वर्ष 1985-2018 के आंकड़ों के विश्लेषण के अनुसार अध्ययन क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन के साथ औसत तापमान (+1.9 °C) और वर्षा में विषमता (-698.1 मिमी) दर्ज कि गई है।
- गंगा नदी के निचले भाग में स्थित दो बाढ़कृत आर्द्रक्षेत्रों में जंतुप्लवक जमाव की प्रकृति और रोटिफर आधारित टैक्सोनोमिक सूचकांकों का मूल्यांकन किया गया जिससे जैव-जलविज्ञान के प्रभाव का अध्ययन किया जा सके। व्यापक ट्रांफिक स्टेट इंडेक्स (mTSI) और आर्द्रक्षेत्रों के रोटिफर ट्रांफिक स्टेट इंडेक्स (mTSIROT) से पता चला कि दोनों आर्द्रक्षेत्रों की प्रकृति निचले मेसो-ट्रांफिक से लेकर थोड़ी यूट्रोफिक हो रही है।
- गंगा नदी में विदेशी प्रजातियाँ (कॉमन कार्प) की प्रचुरता और बीओडी तथा कुल फॉस्फोरस आदि के साथ इसका संबंध मानवजनित प्रदूषण की भूमिका को दर्शाता है।
- तामी नदी के निचले हिस्से में गोबिड, ईल, बार्बस इत्यादि अन्य छोटी मछलियों के साथ-साथ *मैक्रोब्रैकियम लारमिरेलरेई*, *मैक्रोब्रैकियम किस्टिनेंस* *मैक्रोब्रैकियम टिवारी* जैसे छोटे झींगुरों को पकड़ने के लिए पौधा आधारित एकत्रीकरण विधि का प्रयोग किया गया।
- जुलाई 2020 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से अनुमानित मछली पकड़ 14.097 टन थी जो जून 2020 की तुलना में 30% अधिक थी। भारतीय मुख्य कार्प प्रजातियों का योगदान 21.52 प्रतिशत और विदेशी मछलियों का योगदान 13.66 प्रतिशत दर्ज किया गया।

जनजाति उप योजना के तहत मेघालय के उमियाम जलाशय में संस्थान और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय केंद्र (ICAR-RC NEH), उमियाम का पिंजरे में मछली पालन का एक सहयोगात्मक प्रयास

मेघालय के री-भोई जिले में स्थित उमियाम जलाशय (25°39'30" उत्तर और 91°43'51" पूर्व) समुद्र तल से 900 मीटर की ऊँचाई पर स्थित एक छोटा जलाशय है। इसे उमरु-उमियम हाइड्रो-इलेक्ट्रिक परियोजना (हाइड्रो-इलेक्ट्रिक पावर जनरेशन) के लिए उमियाम नदी पर बनाया गया था और 1965 में चालू किया गया था। यह जलाशय एक खुला जल क्षेत्र है। इस जलाशय में सीमित रूप में और असंगठित तरीके से स्थानीय खासी जनजाति व्यावसायिक मछली पकड़ने (गिल



नेट का उपयोग) का काम करती है। इस जलाशय में प्रमुखतः कॉमन कार्प (साइप्रिनस कारपियो) और चॉकलेट महासीर (नियोलिसीओसिलस हेक्सागोनोलेपिस) पायी जाती है। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. जे. के. जेना, उप महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने की तथा आदिवासी मछुआरों को आजीविका सहायता प्रदान करने के विकल्प के रूप में जलाशय में पिंजरे में मछली पालन करने के विचार की सराहना की। पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए इस अनुसंधान परिसर में दिनांक 23 अगस्त 2018 को उमियाम जलाशय में उमनीहु खवन गांव में संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने पहली बार पूर्वोत्तर क्षेत्र, उमियाम और 50 स्थानीय मछुआरों के लिए जनजाति कार्यक्रम के तहत जलाशय में पिंजरा में मत्स्य पालन करने की पहल की। री-भोई किसान संघ से



संबंधित श्री डी. माजाओ, संघ के अध्यक्ष और श्री ब्राइटस्टार के. संघ के सचिव के नेतृत्व में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इस पहल के तहत छह सिफरी जीआई (CIFRI-GI) केज (जलग्रहण क्षमता:90 घन मीटर / पिंजरा) की एक बैटरी (जलग्रहण क्षमता 540 घन मीटर) को जलाशय में स्थापित किया गया। संस्थान और पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के क्षेत्रीय केंद्र (ICAR RC for NEH Region) द्वारा संयुक्त रूप से उमिर जलाशय, मेघालय में 'पिंजरापालन पर एक हितधारक परामर्श-सह-प्रशिक्षण' कार्यक्रम को संयुक्त रूप से दिनांक 24 सितंबर 2019 को उमनिहु ख्वान गांव में उत्तरपूर्वी पहाड़ी क्षेत्र के लिए आयोजित किया गया था। जलग्रहण क्षमता 100 घन मीटर वाले प्रति पिंजरे (6x4x4 घन मीटर प्रति पिंजरा) में कुहरी / लेबियो गोनियस (औसत लंबाई 12.01 सेमी और औसत वजन 18.31 ग्राम), अमूर कॉमन कार्प (11.09 सेमी, 20.4 जी) और कोई कार्प (10.88 सेमी, 19.8 जी) की अंगुलिकाओं को संचयित किया गया। मत्स्य बीज संचयन कार्यक्रम के माध्यम से पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के क्षेत्रीय केंद्र के मत्स्य प्रभाग द्वारा अनुगुलिकाओं को प्रदान की गई। सिफरी केज ग्रो (CIFRI-CAGEGROW®) प्लोटिंग फीड को मछली के उनके शरीर भार के 3-5 प्रतिशत के हिसाब से रोजाना दो बार खिलाया जाता था। संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय केंद्र, उमियाम द्वारा नियमित रूप से मछलियों के विकास और पानी की गुणवत्ता की निगरानी की गई, जबकि स्थानीय किसानों द्वारा उन्हें दैनिक भोजन दिया गया।

पांच महीने के बाद, एल. गोनियस, अमूर कार्प और कोई कार्प का अधिकतम वजन क्रमशः 217 ग्राम, 660 ग्राम और 665 ग्राम दर्ज किया गया (औसत वजन क्रमशः 93.1 ग्राम, 339.5 ग्राम और 258.4 ग्राम)। अमूर कार्प की अतिजीविता दर सबसे अधिक (80%) पायी गयी। उसके बाद कोई कार्प और एल. गोनियस कोई रोग संक्रमण नहीं देखा गया। अतिजीविता और वृद्धि के अनुसार में अमूर कार्प को जलाशय में पिंजरा पालन के लिए सबसे उपयुक्त मछली प्रजाति पाया गया। पिंजरों से सीधे तौर पर भाग लेने वाले किसानों (50 मछुआरों) को लाभ मिला और पिंजरा पालन की सफलता से उत्साहित होकर किसानों ने स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, आईसीआईसी कॉम्प्लेक्स शाखा, उमियाम में बैंक खाते (उमनिहु ख्वान कल्याण कोष) में प्राप्त आय का एक हिस्सा जमा किया।

जनजातीय उपयोजना कार्यक्रम /अनुसूचित जाति उपयोजना कार्यक्रम के तहत कोविद 19 अनलॉक -3 में संस्थान द्वारा विस्तारित अम्फान पूर्व सहायता कार्य ।

पश्चिम बंगाल के तटीय क्षेत्र में दिनांक 20 मई, 2020 को विनाशकारी अम्फान चक्रवात के कारण सुंदरबन क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित हुआ है। चक्रवात से भूखलन होने के बाद तटीय इलाकों में 150-160 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से हवा दर्ज की गई। चक्रवात

अम्फान ने पश्चिम बंगाल में व्यापक रूप से नुकसान पहुँचाया, विशेष रूप से सुंदरबन क्षेत्र में, जहां स्थानीय लोगों सबसे अधिक प्रभावित हुए। कई ब्लॉक बसंती, गोसाबा, कुलतली, काकद्वीप, नामखाना, दक्षिण 24 परगना में पथरप्रतिमा और उत्तरी 24 परगना में मिनसाखा, हिंगलगंज और हसनाबाद को अम्फान ने भारी तबाही मचाई। कोविद 19 महामारी ने स्थिति को और अधिक खराब बना



दिया है जिसके कारण आदिवासीयों की आजीविका अब खतरे में है।

संस्थान वर्ष 2013 से सुंदरबन क्षेत्र के सीमांत समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को बढ़ाने के लिए काम कर रहा है। सुंदरबन क्षेत्रों में चक्रवात अम्फान के दौरान मछलियों संख्या में भारी कमी दर्ज की गई थी और पानी की गुणवत्ता भी प्रभावित हुई। जिन गाँवों में संस्थान काम कर रहा है, उन लाभार्थियों को तालाबों से पड़े या उनके गिरे हुए हिस्सों को हटाकर और यथासंभव कार्बनिक पदार्थ को हटाकर तालाबों की तुरंत सफाई करने की सलाह दी गयी थी। संस्थान के टीम ने पानी की गुणवत्ता को बहाल करने के लिए अपने जल क्षेत्रों के अनुसार चूने के की खुराक देने की भी सिफारिश की। कोविद 19 महामारी और लॉकडाउन स्थिति के कारण, टेलीफोन द्वारा तकनीकी सलाह दी गई। इस नाजुक स्थिति से निपटने के लिए, संस्थान ने गोसाबा (58) और सागर द्वीप (105) के आदिवासी समुदाय को मात्स्यिकी प्रबंधन से जुड़े सामान भी वितरित किए।

दक्षिण चौबीस परगना जिले के बसंती ब्लॉक की जनगणना 2011 के अनुसार कुल जनसंख्या 336,717 है। इसमें से 35% अनुसूचित जाति



के हैं और 6% अनुसूचित जनजाति के हैं। हाशिये पर पड़े समुदाय के लोगों की आजीविका का समर्थन करने के लिए संस्थान ने कुलतली

मिलन तीर्थ के साथ कार्य साझा किया, जो एक गैर-लाभकारी संगठन



है। डॉ. बि. के. दास ने 256 मछुआरों को 5000 किलोग्राम चूना, 2.5 टन मछली का चारा और 900 किलोग्राम मछली के बीज (SC-196 और ST-60) वितरित किए। उन्होंने यह भी घोषित किया कि कुलतली में संस्थान सीमांत समुदाय की महिलाओं की आजीविका का समर्थन करने के लिए तीन सजावटी मछली इकाई स्थापित करेगी। डॉ. बि. के. दास ने अनुसूचित जनजाति लाभार्थियों के तालाबों में मछली के बीजों को संचयित किया। डॉ. यू. के. सरकार, आरईएफ विभाग के प्रमुख, ने कोविड-19 के सभी सुरक्षा उपायों को बनाए रखते हुए उन्हें तकनीकी मार्गदर्शन भी प्रदान किया। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के छात्रों के विकास के लिए इस अवसर पर कुल्दी के हायर सेकेंडरी स्कूल के तालाब को इस कार्यक्रम में शामिल किया गया और 6000 मछली के बीजों के साथ स्टॉक किया गया। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. अपर्णा रॉय, वैज्ञानिक, डॉ. पी. के. परिदा, वैज्ञानिक, डॉ. संजय भौमिक, सीटीओ, श्री एल. चक्रवर्ती, टीओ और श्री के. मंडल, टीए द्वारा किया गया। श्री सुजीत चौधरी, एसीटीओ ने मीडिया कवरेज के लिए कार्यक्रम का दस्तावेजीकरण किया।



इस अवसर पर गैर सरकारी संस्था मिलन तीर्थो सोसायटी के अध्यक्ष श्री लोकमन मोल्ला ने संस्थान के निदेशक डॉ. बी.के.दास को शाल ओढ़ाकर एवं पुष्प गुलदस्ता और मोमेन्टो देकर सम्मानित किया और सुंदरवन के सीमांत समुदाय की आजीविका के उत्थान के प्रति उनके किये जा रहे कार्यों की सराहना की।



महत्वपूर्ण बैठकें

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 24 जुलाई, 2020 को पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अधिकारियों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के द्वारा बैठक में भाग लिया में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 25 जुलाई, 2020 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से ईएसी (रिवरवैली हाइड्रो इलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट) बैठक की बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 28 और 29 जुलाई, 2020 को आयोजित एआर रिसर्च फ्रंटियर्स एंड प्रोस्पेक्ट्स इन बायोसाइंसेज एंड बायोटेक्नोलॉजी 'पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन सह वेबिनार में भाग लिया। यह वेबिनार पीजी डिपार्टमेंट ऑफ बायोसाइंसेज एंड बायोटेक्नोलॉजी, फकीर मोहन यूनिवर्सिटी, बालासोर, ओडिशा द्वारा आयोजित किया गया तथा इसमें निदेशक महोदय ने "माइक्रो-प्लास्टिक प्रदूषण: अंतर्स्थलीय जल प्रणालियों के लिए एक उभरता हुआ खतरा" विषय पर एक व्याख्यान भी प्रस्तुत किया।
- संस्थान के वैज्ञानिकों ने दिनांक 01 अगस्त 2020 को बंकिम चन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, कल्याणी द्वारा आयोजित 'रेनबो (इंद्रधनुष) क्रांति परियोजना' पर अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 11 अगस्त, 2020 को उप महानिदेशक (मत्स्य विभाग) और मात्स्यिकी संभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 12 अगस्त, 2020, केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय की कृषि इकाई, नई दिल्ली के साथ भारत की अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन में इनपुट लागत और फार्म गेट की मूल्यों पर अध्ययन संबंधी बैठक पर निदेशक, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के द्वारा भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 13 अगस्त 2020 को संयुक्त आयुक्त, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के साथ बैठक में भाग

लिया। इस बैठक का उद्देश्य विभिन्न संभावित अंतर्स्थलीय जल निकायों पर रिपोर्ट के प्रारूपण करना और अंतर्स्थलीय मत्स्य संसाधन से संबंधित आंकड़ों पर चर्चा करना था।

- संस्थान ने दिनांक 15 अगस्त, 2020 को नेशनल एसोसिएशन ऑफ सॉफ्टवेयर एंड सर्विस कंपनीज (NASSCOM) के सहयोग से भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार, किसान मित्र कार्यालय द्वारा आयोजित "कृषि प्रौद्योगिकियों के व्यावसायीकरण" पर वेबिनार में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 18 अगस्त 2020 को मत्स्य महाविद्यालय, छत्तीसगढ़ कामधेनु विश्व विद्यालय द्वारा आयोजित "छत्तीसगढ़ के मछली किसानों की आय दोगुनी करने" पर राष्ट्रीय वेबिनार में भाग लिया।
- संस्थान के वैज्ञानिकों ने दिनांक 20 अगस्त 2020 को आयोजित राष्ट्रीय जलवायु अनुकूल कृषि पहल परियोजना के तकनीकी कार्यक्रम को अंतिम रूप देने हेतु वेबिनार में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 22 अगस्त, 2020 को भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था की कार्यकारी समिति की ई-बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 26 अगस्त ने केरल यूनिवर्सिटी ऑफ फिशरीज एंड ओशन साइंसेज द्वारा आयोजित स्थायी जलीय कृषि के लिए जलीय पशु स्वास्थ्य प्रबंधन पर राष्ट्रीय वेबिनार में भाग लिया और जलीय कृषि में रोग निदान क्षेत्र में हुये विकास पर चर्चा की।

गतिविधियां

- संस्थान और हिमाचल प्रदेश के मत्स्य विभाग के बीच एक समझौता ज्ञापन पर सहमति बनी। इस समझौता ज्ञापन का उद्देश्य "गोबिंदसागर जलाशय की मछली उत्पादकता बढ़ाने के लिए मत्स्य पालन और पारिस्थितिक स्थिति, खतरों और उपचारात्मक उपायों" पर एक परामर्श परियोजना के बारे में विचार-विमर्श करना था।
- संस्थान में 74वां स्वतंत्रता दिवस दिनांक 15 अगस्त 2020 को मनाया गया। निदेशक ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया तथा लोगों को

प्रेरणादायी संदेश दिया। इस वर्ष कोविड -19 प्रोटोकॉल का पालन किया गया जिससे सामाजिक दूरी बनाए रखने के लिए हर वर्ष की तुलना में अपेक्षाकृत कम प्रतिभागियों को सम्मिलित होने का अवसर मिला।

- संस्थान के वैज्ञानिकों ने दिनांक 11 अगस्त, 2020 को कृषि विभाग, मध्य प्रदेश सरकार द्वारा आयोजित एक वेबिनार 'मध्य प्रदेश के युवाओं को आजीविका और पोषण सुरक्षा के लिए मत्स्य पालन और जल कृषि' पर एक व्याख्यान दिया। इस वेबिनार का आयोजन 'आत्म निर्भर मध्य प्रदेश' योजना के अंतर्गत किया था।
- संस्थान के वैज्ञानिकों ने दिनांक 17-18, अगस्त 2020 को कोलकाता के आशुतोष कॉलेज द्वारा मछली उत्पादन और प्रसंस्करण के लिए विशेष संदर्भ के साथ मत्स्य पालन और जलकृषि में प्रौद्योगिकी के विकास पर राष्ट्रीय वेबिनार में एक आमंत्रित व्याख्यान दिया।
- संस्थान के वैज्ञानिकों ने दिनांक 22-23 अगस्त, 2020 के दौरान आईक्यूएसी, एपीसी कॉलेज, न्यू बैरकपुर, पश्चिम बंगाल के सहयोग से औद्योगिक मछली और मत्स्य पालन विभाग द्वारा 'मत्स्य क्षेत्र में उद्यमिता के अवसर' में पर वेबिनार में एक व्याख्यान दिया।
- महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतीहारी के संकाय और छात्रों के लिए एक वेबटॉक दिया।
- दिनांक 29 अगस्त, 2020 को रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय झाँसी के शैक्षणिक और प्रशासनिक भवन का उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किया गया। इस अवसर पर माननीय प्रधान मंत्री, माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर जी, माननीय मुख्य मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार, योगी आदित्यनाथ जी ने छात्रों कृषको एवं वैज्ञानिकों को सम्बोधित किया। इस कार्यक्रम को संस्थान के सभी वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों, शोध छात्रों प्रशासनिक अधिकारी, कर्मचारियों ने pmindiawebcast.nic.in के माध्यम से देखा।

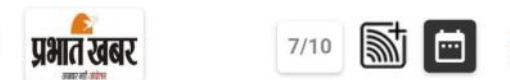
सम्पादक मण्डल

सम्पादक मण्डल की ओर से आप समस्त पाठकों को सितम्बर, 2020 का यह अंक प्रस्तुत है। आप सभी के बहुमूल्य सुझाव के लिए आप सभी को हार्दिक धन्यवाद। आशा है, आगे भी आप सभी का सहयोग ऐसे ही मिलता रहेगा। सम्पादक मण्डल के तरफ से सभी पाठक गण को हार्दिक बधाई और ढेरों शुभकामनाएँ!

आप सभी को संपादक मण्डल की तरफ से धन्यवाद



समाचार पत्रों में संस्थान



नदीय डॉल्फिन संरक्षण पर दो दिवसीय वेबिनार

कोलकाता. भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) और राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन द्वारा एक संयुक्त पहल पर नदीय डॉल्फिन संरक्षण पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार का उद्देश्य दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में क्षेत्रीय रणनीति और सख्तदारी के माध्यम से नदीय डॉल्फिन का संरक्षण करना है। इसमें दक्षिण पूर्व एशिया तथा भारत, नेपाल, म्यांमार, बांग्लादेश और इंडोनेशिया के डॉल्फिन के विशेषज्ञ शामिल हुए। बैरकपुर स्थित सिफरी संस्थान के निदेशक डॉ बिके दास ने अपने स्वागत भाषण में वेबिनार और उसके उद्देश्यों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्रों में डॉल्फिन संरक्षण को मजबूत करने पर जोर दिया। वेबिनार में शामिल नई दिल्ली स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (मत्स्य विज्ञान) के उप महानिदेशक डॉ जेके जेना ने कहा कि डॉल्फिन संरक्षण के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के दो मात्स्यिकी संस्थान, भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) और राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन द्वारा एक संयुक्त पहल पर नदीय डॉल्फिन संरक्षण पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार में वन्य जीव संस्थान सेवा के निवृत्त प्रधान वैज्ञानिक डॉ बीसी चौधरी, भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के पूर्व निदेशक, प्रो. ए. पी. शर्मा, मुंबई स्थित भाकृअनुप-केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान के पूर्व कुलपति डॉ दिलीप कुमार, वेटलैंड इंटरनेशनल के उपाध्यक्ष डॉ अजीत पटनायक, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के जैव विविधता सलाहकार डॉ संदीप बेहरा, नवी दिल्ली सिफरी संस्थान के पूर्व सहायक महानिदेशक डॉ वीआर चित्रांशी, डिब्रुगढ़ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ एसपी विश्वास, बांग्लादेश से डॉ सैयद इस्तियाक, म्यांमार से डॉ हिला विन, नेपाल से डॉ एम के श्रद्धा, इंडोनेशिया से डॉ डैनियल कर्व ने अपने अपने विचार व्यक्त किए।



१४४ मछलीबाड़ी मारुती मछली उत्पादन वापस आवासीय 'सिफरी'

ICAR-CIFRI has been working in Sundarbans to upscale the socio-economic condition of the marginalised community since 2013. During Amphan, many fishes died and the water quality deteriorated in Sundarbans areas. In the adopted villages, team CIFRI advised the beneficiaries for immediate cleaning of the ponds manually by removing of all the fallen parts of trees from the ponds and the bottom organic matter as much as possible. Team also recommended the dose of lime application according to their water areas for restoring the water quality. ICAR-CIFRI also distributed fisheries inputs support to the tribal populace of Gosaba(50) and Sagar Island(105). To support the livelihoods of the marginalised community, ICAR-CIFRI joined Kullali Milan Teritha, a non-profit making organisation. Dr B.K Das distributed 5,000 kg lime, 2.5 tonnes fish feed and 900 kg fish seed to 256 fishers' family (SC-196 and ST-60). ICAR-CIFRI will establish three ornamental fish units to support the livelihoods of the marginalised women in Kullali.



आइसीएआर के निदेशक का अम्फन प्रभावित क्षेत्रों का दौरा



कोलकाता. बैरकपुर स्थित भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (आइसीएआर सिफरी) के निदेशक डॉ बिके दास ने संस्थान कर्मियों के साथ अम्फन प्रभावित मूल्यों के कुल्लाही और बांसी इलाके का दौरा किया। साथ ही मछुआरों को एक एर-बैरकपुरी संगठन, कुल्लाही मिलन तोष के साथ मिलकर मछली पालन समग्री बांटी। इस अवसर पर 256 मछुआरों को 5000 किलोग्राम चूना, 2.5 टन मछली का बीजा और 900 किलोग्राम मछली के बीजा वितरित किये गये। डॉ दास ने कहा कि सिफरी बहुत दिनों से सुंदरान के मछुआरों के सामाजिक-आर्थिक स्थिति सुधारा करने के लिए काम कर रहा है। संस्थान को अम्फन से ही प्रकृतिक आपदा से प्रभावित मछुआरों के लिए तत्पर रहना है। संस्थान के प्रमुख अध्यक्ष डॉ वृं सुखरकर ने कोविड-19 से बचाव के लिए तकनीकी सहायता और कार्यक्रम के दौरान डॉ अरुणा राय, वैज्ञानिक डॉ वीके पोरत, वैज्ञानिक और डॉ संजय भोमिक, सुनीता चौधरी समेत संस्थान के डॉ अधिकारी उपस्थित थे।

उम-पुने कतिग्रन्थ

मत्स्यजीवीयों के वैज्ञानिक पत्राचार दिनांक सिफरी

विश्व कतिग्रन्थ, भारतकपुर, उम-पुने काटकेर बापटो सवेकके कतिग्रन्थ इतकेर सुवकसन कवाका। बापटके कतिग्रन्थ इतकेर सुवकसन कवाका। बापटके कतिग्रन्थ इतकेर सुवकसन कवाका। बापटके कतिग्रन्थ इतकेर सुवकसन कवाका।

२४ परगना

सुमरनेने माछ चाखे उइसाह

सुमरनेने माछ चाखे उइसाह। सुमरनेने माछ चाखे उइसाह। सुमरनेने माछ चाखे उइसाह। सुमरनेने माछ चाखे उइसाह।


रेले हय

रेले हय। रेले हय। रेले हय। रेले हय। रेले हय। रेले हय। रेले हय। रेले हय। रेले हय। रेले हय।

SRTR Search Result... ICAR SBI Banking Aes Bank Videos DD KISAN Google Search CIFRI Railway Booking

Mirror Now Digital
Updated Aug 25, 2020 | 17:56:18

The experts who participated in the webinar said such discussions are very helpful in developing contours of 'Project Dolphin' in India.



KEY HIGHLIGHTS

- River Dolphins, a unique species found mainly in rivers of Asia and South America, are vanishing rapidly.
- The Gangetic Dolphin, the national aquatic animal of India, has been declared endangered by International Union for the Conservation of Nature.

New Delhi: Paving the way for regional cooperation, experts from the four nations-India, Bangladesh, Nepal and Myanmar, have come together to enhance the conservation of river dolphins in the region.

The issue of river dolphin conservation was discussed during a webinar on "Exploring the impact of COVID-19 on the ecosystem health of rivers and its dolphin population: Present status and future strategy for conservation in India-Bangladesh-Myanmar-Nepal" organised by Inland Fisheries Society of India (ICAR), a Central Inland Fisheries Research Institute, National Mission for Clean Ganga, Professional Fisheries Graduates Forum (PFGF) and Aquatic Ecosystem Health and Management Society.

is, a unique species found mainly in rivers of Asia and South America, are vanishing rapidly. While, the Gangetic national aquatic animal of India, has been declared endangered by International Union for the Conservation of

SECURITY SYSTEM 2020 x ICAR - CIFRI x Experts from four nations include x India Bangladesh Nepal Myanmar x

article/India-Bangladesh-Nepal-Myanmar-join-hands-to-enhance-conservation-of-river-dolphins/25-08-2020-31006/

BW BUSINESSWORLD
September 16, 2020

India, Bangladesh, Nepal, Myanmar Join Hands To Enhance Conservation Of River Dolphins

India, Bangladesh, Nepal, Myanmar join hands to enhance conservation of river dolphins

25 August, 2020 by ANI

New Delhi [India], Aug 25 (ANI): Experts from four countries-India, Bangladesh, Nepal and Myanmar have joined hands to enhance conservation of river dolphins in the region, paving way for regional cooperation.

A webinar on "Exploring the impact of COVID-19 on the ecosystem health of rivers and its dolphin population: Present status and future strategy for conservation in India-Bangladesh-Myanmar-Nepal" was organised by Inland Fisheries Society of India, ICAR - Central Inland Fisheries Research Institute, National Mission for Clean Ganga, Professional Fisheries Graduates Forum (PFGF) and Aquatic Ecosystem Health and Management Society.

During the session, Dr JK Jena, DDG (Fisheries Science), ICAR said, "These animals do not realise boundaries and have tried to find habitat whenever possible. Hence, regional cooperation is very important in conserving them."

Rajiv Ranjan Mishra, Director General, Namami Gange also shared his experiences on dolphin conservation linking it to the rejuvenation of Ganga. Continuous efforts of Namami Gange to bring dolphin conservation to national attention have resulted in the announcement of "Project Dolphin" by Prime Minister Narendra Modi under the Ministry of

प्रकाशन मंडल
प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,
संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रतीण मौर्य, गणेश चंद्र, राजीव तात, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास
संकलन एवं सम्पादन सहायता: मो. कसिम फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।
भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन) बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120 भारत
दूरभाष: +91-33-25921190/91 फैक्स: +91-33-25920388 ई-मेल: director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट: www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मासिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुनः उत्पन्न नहीं की जा सकती है